www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-3* *October 2024***

बिहार में हुए आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव

डॉ० अमरधर लाल

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सी. पी. वर्मा कॉलेज सिमरी, बिहटा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना।

सारांशः

बिहार के ऐतिहासिक आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव एक महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है, जो वैश्विक स्तर पर घटित घटनाओं और बिहार के सामाजिक–राजनीतिक संघर्षों के बीच के संबंधों को उजागर करता है। इस शोधपत्र में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय घटनाओं जैसे प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध, रूसी क्रांति, फ्रांसिसी क्रांति, और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर विश्वभर में चल रहे आंदोलनों का बिहार के आंदोलनों पर क्या प्रभाव पड़ा, इस पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। बिहार में हुए किसान आंदोलन, छात्र आंदोलन, नक्सलवादी आंदोलन, और अन्य सामाजिक सुधार आंदोलनों पर वैश्विक क्रांतिकारी विचारधाराओं का क्या प्रभाव पड़ा, यह भी विस्तार से विश्लेषित किया गया है। यह शोध दर्शाता है कि किस प्रकार वैश्विक घटनाएं स्थानीय आंदोलनों को प्रेरित करती हैं, उन्हें दिशा देती हैं और उनके विचारों को आकार देती हैं। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि बिहार के आंदोलनों ने अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से प्रेरणा ली और स्थानीय संदर्भ में उन्हें लागू किया, जिससे बिहार का सामाजिक और राजनीतिक ढांचा प्रभावित हुआ। इस शोध का उद्देश्य बिहार के आंदोलनों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रखकर उनकी गहन समझ प्रदान करना है।

मुख्य शब्दः बिहार, आंदोलनों का इतिहास, अंतरराष्ट्रीय घटनाएं, विश्व युद्ध, रूसी क्रांति, नक्सलवादी आंदोलन, भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष, वैश्विक प्रभाव।

परिचयः

बिहार भारत के प्रमुख राज्यों में से एक है, जहाँ सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आंदोलनों की एक समृद्ध परंपरा रही है। बिहार का सामाजिक और राजनीतिक परिवेश अत्यधिक सक्रिय और गतिशील रहा है, जिसने समय–समय पर भारत की राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित किया है। यह राज्य न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अग्रणी भूमिका में रहा, बल्कि स्वतंत्रता के बाद भी यहां विभिन्न आंदोलन उभरते रहे, जिन्होंने देश की सामाजिक और आर्थिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला। बिहार के आंदोलनों की जड़ें राज्य के विशेष भू–राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों में गहराई से जुड़ी हैं, जो औपनिवेशिक काल से लेकर आधुनिक भारत तक विस्तृत हैं। बिहार में प्रमुख सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आंदोलनों का एक लंबा इतिहास रहा है। इनमें से कई आंदोलनों ने न केवल बिहार की दिशा और दशा को बदला, बल्कि उन्होंने भारतीय राजनीति और समाज को भी प्रभावित किया।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुआ चंपारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस आंदोलन ने न केवल किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया, बल्कि गांधीजी की नेतृत्व क्षमता को भी राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई। बिहार के चंपारण में नील की खेती के कारण किसानों का शोषण किया जा रहा था। इस आंदोलन ने बिहार में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता की नींव रखी।[1] 1930 के

दशक में बिहार में कई किसान आंदोलनों ने जन्म लिया, जो जमींदारी प्रथा और अन्य शोषणकारी कृषि व्यवस्थाओं के खिलाफ थे। ये आंदोलन मुख्य रूप से भूमि सुधार, अधिक उपज पर अधिकार, और सामंती शोषण के खिलाफ थे।[2] लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चलाया गया यह आंदोलन तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार की नीतियों के खिलाफ था। इसे संपूर्ण क्रांति का आंदोलन भी कहा जाता है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक सुधारों के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक सुधार भी था। यह आंदोलन न केवल बिहार में बल्कि पूरे भारत में युवाओं और आम नागरिकों के बीच व्यापक समर्थन प्राप्त करने में सफल रहा। इस आंदोलन ने भारतीय लोकतंत्र में एक नई दिशा दी और आपातकाल की घोषणा का कारण बना।[3]

1960 और 1970 के दशक में बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में नक्सलवादी आंदोलन ने जोर पकड़ा, जो भूमिहीन मजदूरों और किसानों के अधिकारों के लिए था। यह आंदोलन वर्ग संघर्ष पर आधारित था और इसकी मुख्य मांग भूमि सुधार और सामाजिक न्याय थी। नक्सलवादी आंदोलन ने बिहार के ग्रामीण समाज में गहरा प्रभाव डाला और राज्य में राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दिया। बिहार में जातिगत असमानता और आरक्षण के मुद्दे पर केंद्रित इस आंदोलन ने राष्ट्रीय राजनीति में एक नया मोड़ दिया। वी.पी. सिंह सरकार द्वारा मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के प्रयासों ने बिहार और उत्तर भारत में व्यापक विरोध और समर्थन का माहौल बनाया। यह आंदोलन सामाजिक और राजनीतिक बदलाव का एक प्रतीक बन गया और भारतीय समाज में जातिगत विभाजन को स्पष्ट किया।[4]

बिहार में हुए ये आंदोलन न केवल राज्य की राजनीति और समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं, बल्कि इनका राष्ट्रीय स्तर पर भी ऐतिहासिक महत्व है। प्रत्येक आंदोलन ने न केवल अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश को प्रभावित किया, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया। चंपारण सत्याग्रह ने स्वतंत्रता संग्राम में जनता की भागीदारी को बढ़ावा दिया और किसानों की आवाज को राष्ट्रीय मंच पर लाया। इसी प्रकार, जेपी आंदोलन ने राजनीतिक भ्रष्टाचार के खिलाफ एक व्यापक जनजागरण का निर्माण किया, जिसने लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत किया और युवा पीढ़ी को सामाजिक बदलाव की दिशा में प्रेरित किया। नक्सलवादी आंदोलन, हालांकि विवादास्पद रहा है, फिर भी इसने सामाजिक असमानता और भूमि सुधार की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया। इसने सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक और सामाजिक सुधारों की दिशा में कार्य करने के लिए मजबूर किया। मंडल आंदोलन ने भारत के सामाजिक ताने–बाने में आरक्षण और जाति आधारित विभाजन को खुलकर सामने लाया। इस आंदोलन ने आरक्षण की नीतियों पर राष्ट्रीय बहस को जन्म दिया और राजनीतिक दलों को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। इन आंदोलनों का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने न केवल बिहार बल्कि समूचे भारतीय समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये आंदोलन सामाजिक अन्याय, राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक असमानता के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक बने और उन्होंने आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया। बिहार में हुए आंदोलनों ने न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बदलाव की लहर पैदा की।

अध्ययन की आवश्यकता

बिहार में हुए आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव एक महत्वपूर्ण और गहन शोध का विषय है। बिहार का सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक इतिहास आंदोलनों से समृद्ध रहा है, जो न केवल स्थानीय समस्याओं से प्रेरित थे, बल्कि अंतरराष्ट्रीय घटनाओं और विचारधाराओं का भी उन पर गहरा असर पड़ा। वैश्विक क्रांतियों, विश्व युद्धों, और औपनिवेशिक संघर्षों ने बिहार के आंदोलनों को दिशा दी और उन्हें प्रेरित किया। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है कि यह समझा जा सके कि किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने बिहार के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया और उन आंदोलनों ने राज्य और देश की राजनीतिक दिशा को कैसे बदला। यह शोध बिहार के आंदोलनों के अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में होने वाले प्रभावों की विस्तृत समझ प्रदान करेगा, जिससे भविष्य के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के लिए आवश्यक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके। इससे न केवल बिहार के आंदोलनों का ऐतिहासिक महत्व उजागर होगा, बल्कि यह वैश्विक और स्थानीय घटनाओं के पारस्परिक संबंधों को भी समझने में सहायक होगा।

अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

बिहार में हुए आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का गहरा प्रभाव पड़ा है। वैश्विक स्तर पर हुए प्रमुख

राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन जैसे प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, रूसी क्रांति, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, और फ्रांसीसी क्रांति ने न केवल विश्व को बदला, बल्कि भारत के विभिन्न प्रांतों, विशेष रूप से बिहार में भी, आंदोलनों को प्रभावित किया। इन अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने बिहार के सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक आंदोलनों को नया दृष्टिकोण और दिशा दी। बिहार के आंदोलनों को इन घटनाओं से नई प्रेरणा मिली और उन्होंने वैश्विक विचारधाराओं को अपने स्थानीय संघर्षों में समाहित किया। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध ने भारत, विशेषकर बिहार में, आंदोलनों को नई दिशा दी। प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) के दौरान भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गति आई, क्योंकि अंग्रेजों ने भारतीयों से युद्ध में सहयोग की अपेक्षा की थी। इसने भारतीय जनता में असंतोष को और बढ़ावा दिया। बिहार में भी युद्धकालीन आर्थिक कठिनाइयों, खाद्य संकट और बेरोजगारी ने असंतोष की लहर पैदा की। इससे गांधीजी का नेतृत्व उभर कर आया और चंपारण सत्याग्रह जैसे आंदोलन शुरू हुए। द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) के दौरान भी भारतीय जनता ने अंग्रेजी शासन के प्रति असंतोष व्यक्त किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बिहार में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन तेज हुआ।[5]

1917 में हुई रूसी क्रांति ने भारत के आंदोलनों, विशेषकर बिहार में, एक विशेष प्रभाव डाला। इस क्रांति ने सामाजिक न्याय, समानता और वर्ग संघर्ष जैसे विचारों को प्रबल किया। बिहार में नक्सलवादी आंदोलन पर इस क्रांति का विशेष प्रभाव देखा गया, जहां गरीब किसानों और भूमिहीन मजदूरों ने जमींदारों और सामंती व्यवस्थाओं के खिलाफ संघर्ष किया। रूसी क्रांति की विचारधारा ने बिहार के सामाजिक आंदोलनों को प्रेरित किया, जहां समाज के निचले तबके ने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई। यह प्रभाव विशेष रूप से 1960 और 1970 के दशकों में बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में देखा गया। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775–1783) और फ्रांसीसी क्रांति (1789–1799) ने दुनिया भर में स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के नए आदर्श स्थापित किए। इन घटनाओं ने भारत और विशेष रूप से बिहार के आंदोलनों पर भी गहरा प्रभाव डाला। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की प्रेरणा दी। फ्रांसीसी क्रांति के 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' के नारे ने भारतीय समाज में सामंती और जातिगत असमानताओं के खिलाफ संघर्ष को प्रेरित किया। बिहार में, इन क्रांतियों ने सामाजिक न्याय और अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[6]

इन अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव बिहार के आंदोलनों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वैश्विक स्तर पर स्वतंत्रता, समानता और न्याय के लिए किए गए संघर्षों ने बिहार के आंदोलनों को नई दृष्टि और दिशा दी। चाहे वह प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध हो, रूसी क्रांति हो, या अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियां, इन घटनाओं ने बिहार के लोगों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने और सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

शीत युद्ध और स्वतंत्रता के बाद बिहार के आंदोलन

स्वतंत्रता के बाद भारत का सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य वैश्विक घटनाओं से प्रभावित हुआ, जिसमें शीत युद्ध का महत्वपूर्ण स्थान रहा। शीत युद्ध (1947–1991) के दौरान विश्व दो प्रमुख विचारधाराओं पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच विभाजित था, जिसका सीधा प्रभाव बिहार और अन्य भारतीय राज्यों के आंदोलनों पर पड़ा। इस वैश्विक संघर्ष ने भारत के भीतर वैचारिक विभाजन को गहरा किया, जिससे बिहार में भी कई आंदोलन उभरे, जिनमें नक्सलवादी आंदोलन और समाजवादी विचारधारा के प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बिहार में नक्सलवादी आंदोलन 1960 के दशक में उभरा, जो शीत युद्ध के समय में साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित था। शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ और चीन जैसे साम्यवादी देशों की नीतियों ने वैश्विक स्तर पर समाजवाद और साम्यवाद को बढ़ावा दिया, जिससे भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन किसानों और मजदूरों को अपने अधिकारों के लिए संगठित किया गया। बिहार में यह आंदोलन मुख्य रूप से जमींदारों और गरीब किसानों के बीच भूमि अधिकारों को लेकर संघर्ष पर केंद्रित था। नक्सलवादी आंदोलन को चीन की माओत्से तुंग की विचारधारा से प्रेरणा मिली, जिसने सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से सत्ता पर कब्जा करने और समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने का आह्वान किया। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन और शोषित वर्गों ने इस विचारधारा को अपनाया और नक्सलवादी आंदोलन के रूप में संगठित हुए। शीत युद्ध के दौरान वैश्विक साम्यवादी आंदोलनों की सफलता ने इस आंदोलन को और अधिक प्रेरित किया, जिससे बिहार के कई क्षेत्रों में हिंसक संघर्षों की शुरुआत हुई। यह आंदोलन शीत युद्ध की साम्यवादी विचारधारा और स्थानीय आर्थिक और सामाजिक

असमानताओं का मिश्रण था।[7]

बिहार में स्वतंत्रता के बाद समाजवादी विचारधारा का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जिसे वैश्विक समाजवाद की लहर ने और मजबूत किया। शीत युद्ध के दौरान जब विश्व पूंजीवादी और समाजवादी विचारधाराओं के बीच विभाजित था, तब भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन का नेतृत्व किया, लेकिन आंतरिक रूप से समाजवादी विचारधारा को व्यापक समर्थन मिला। जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने समाजवादी सिद्धांतों को अपनाया और बिहार में व्यापक जनसमर्थन प्राप्त किया। समाजवादी विचारधारा का प्रभाव बिहार में जेपी आंदोलन (1974) के दौरान विशेष रूप से देखा गया, जब बिहार के युवा, किसान और मजदूर समाजवादी आंदोलन में शामिल हुए। यह आंदोलन समाज में समानता, न्याय और सामाजिक सुधारों की मांग कर रहा था, जो शीत युद्ध के दौरान वैश्विक समाजवादी आंदोलनों से प्रेरित था। वैश्विक समाजवाद ने भारतीय समाजवाद को नई ऊर्जा दी और बिहार में राजनीतिक और सामाजिक सुधारों के लिए व्यापक आंदोलन खड़ा हुआ। यह आंदोलन न केवल भ्रष्टाचार और तानाशाही के खिलाफ था, बल्कि समाज में सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना के लिए भी प्रेरित था। इन आंदोलनों ने बिहार के समाज में गहरा प्रभाव डाला और राज्य की राजनीति और सामाजिक संरचना को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[8]

वैश्विक आर्थिक घटनाओं का बिहार के आंदोलनों पर प्रभाव

बिहार, भारत का एक प्रमुख राज्य, वैश्विक आर्थिक घटनाओं से प्रभावित होकर कई आंदोलनों का साक्षी रहा है। 20वीं शताब्दी के अंत और 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में वैश्विक आर्थिक संकटों और घटनाओं ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर बिहार में श्रमिक वर्ग और समाज के निम्न आर्थिक वर्गों पर गहरा प्रभाव डाला। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप बिहार में कई श्रमिक और सामाजिक आंदोलन उभरे। वैश्विक आर्थिक नीतियों, तेल संकट, और वैश्विक मंदी ने राज्य के सामाजिक और आर्थिक परिवेश को प्रभावित किया, जिसके कारण बिहार के आंदोलनों में नई ऊर्जा का संचार हुआ। 1970 और 1980 के दशक में दुनिया भर में कई आर्थिक संकट उभरे, जिनमें तेल संकट (1973) और वैश्विक आर्थिक मंदी (1980) प्रमुख थे। इस वैश्विक आर्थिक अस्थिरता का सीधा प्रभाव बिहार जैसे राज्यों पर भी पड़ा, जहां गरीबी और बेरोजगारी पहले से ही एक बड़ी समस्या थी। 1973 के तेल संकट ने न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को हिला दिया, बल्कि इसका असर भारत की अर्थव्यवस्था और विशेषकर बिहार के औद्योगिक और कृषि क्षेत्रों पर भी पड़ा। तेल संकट के कारण बढ़ती महंगाई, ईंधन की कीमतों में उछाल, और आवश्यक वस्तुओं की कमी ने बिहार के लोगों के जीवन को और अधिक कठिन बना दिया। इस वैश्विक आर्थिक संकट के कारण बिहार में श्रमिक आंदोलनों की एक नई लहर उठी। 1980 के दशक में बिहार के मजदूर वर्ग ने अपनी आर्थिक स्थितियों के सुधार के लिए संगठित होकर आंदोलनों में भाग लिया। वैश्विक आर्थिक मंदी के चलते बिहार के उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए रोजगार संकट और मजदूरी में कमी जैसी समस्याएं सामने आईं। इसने श्रमिक वर्ग में असंतोष को जन्म दिया और बिहार में श्रमिक आंदोलनों की नींव रखी।[9]

बिहार में श्रमिक आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठनों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन और अन्य वैश्विक संस्थाओं ने श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा और सामाजिक न्याय की दिशा में काम किया। इन संगठनों के वैश्विक प्रयासों ने बिहार के श्रमिक आंदोलनों को भी प्रेरित किया। बिहार के श्रमिक आंदोलन, जो मुख्य रूप से मजदूरी, काम के घंटे, और सामाजिक सुरक्षा के मुद्दों पर केंद्रित थे, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठनों की नीतियों और सिद्धांतों से प्रभावित हुए। इन संगठनों ने श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई वैश्विक सम्मेलन आयोजित किए, जिनका असर बिहार के संगठित और असंगठित श्रमिक वर्गों पर पड़ा। 1980 के दशक में बिहार के श्रमिक आंदोलन अधिक संगठित हुए और उन्होंने अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठनों से प्रेरणा लेकर अपने अधिकारों की मांग को और अधिक सशक्त बनाया। वैश्विक आर्थिक घटनाओं का बिहार के आंदोलनों पर गहरा प्रभाव रहा है। 1970 और 1980 के दशक में वैश्विक आर्थिक संकटों ने राज्य में सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता पैदा की, जिससे श्रमिक आंदोलनों में वृद्धि हुई। इसके साथ ही, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठनों ने बिहार के श्रमिक आंदोलनों को दिशा और प्रेरणा दी, जिससे राज्य में श्रमिक अधिकारों की मांग को सशक्त किया गया। इन वैश्विक घटनाओं और संगठनों ने बिहार के आंदोलनों को न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण बना दिया।[10]

राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों पर विदेशी विचारधाराओं का प्रभाव

बिहार के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों पर विदेशी विचारधाराओं का गहरा प्रभाव रहा है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद उभरे आंदोलनों में विदेशी समाजवादी, लोकतांत्रिक और क्रांतिकारी विचारों का योगदान स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बिहार, जहाँ लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे बड़े समाजवादी नेता उभरे, विदेशी समाजवादी और लोकतांत्रिक विचारधाराओं से अत्यधिक प्रभावित था। इसके अलावा, जाति और भूमि सुधार आंदोलनों पर भी विदेशी प्रेरणाओं का महत्वपूर्ण असर पड़ा। इन विचारधाराओं ने बिहार के राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को दिशा दी और सामाजिक न्याय और समानता के मुद्दों को मुख्यधारा में लाने में मदद की। राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चले आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय समाजवादी और लोकतांत्रिक विचारों का विशेष प्रभाव पड़ा। लोहिया, जिन्होंने गांधी के विचारों से प्रेरणा ली, अपने समाजवादी दृष्टिकोण के लिए अंतरराष्ट्रीय समाजवाद के सिद्धांतों से प्रभावित थे। उनके विचारों में यूरोपीय समाजवाद और मार्क्सवादी सिद्धांतों का मिश्रण देखा जा सकता है। लोहिया ने समाजवाद को भारतीय संदर्भ में ढालते हुए जातिवाद और आर्थिक असमानता के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने यूरोप के समाजवादी आंदोलनों से यह सीखा कि सामाजिक और आर्थिक सुधारों के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी होती है। लोहिया के विचारों में यूरोप के समाजवादी आंदोलनों की गूंज सुनाई देती है, जो बिहार में चलने वाले आंदोलनों में भी झलकती है। इसी प्रकार, जेपी आंदोलन (1974) पर भी वैश्विक लोकतांत्रिक विचारों का गहरा प्रभाव था। जयप्रकाश नारायण ने अमेरिकी लोकतंत्र और यूरोपीय समाजवादी आंदोलनों से प्रेरणा ली। उनके संपूर्ण क्रांति आंदोलन में लोकतंत्र, नागरिक अधिकारों और भ्रष्टाचार–मुक्त शासन की मांग मुख्य थी। जेपी ने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरणा लेते हुए भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक सुधारों की आवश्यकता को समझा। उनका आंदोलन भ्रष्टाचार के खिलाफ और जनता के सशक्तिकरण के लिए था, जो लोकतांत्रिक और समाजवादी विचारों से प्रेरित था।[11]

बिहार में जाति और भूमि सुधार आंदोलनों पर भी विदेशी प्रेरणाओं का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। भारतीय जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष में विदेशी क्रांतिकारी विचारधाराओं, विशेष रूप से रूस और चीन की क्रांतियों से प्रेरणा ली गई। नक्सलवादी आंदोलन, जो मुख्य रूप से भूमिहीन किसानों और दलितों के अधिकारों के लिए था, चीन के माओत्से तुंग की विचारधारा से प्रभावित था। माओ के भूमि सुधार और वर्ग संघर्ष के सिद्धांतों ने बिहार के नक्सलवादी आंदोलन को प्रेरित किया, जिसमें किसानों ने जमींदारों के खिलाफ संगठित होकर संघर्ष किया। भूमि सुधार आंदोलनों ने भी वैश्विक स्तर पर अन्य समाजवादी देशों से प्रेरणा ली, जिन्होंने भूमि सुधार को सामाजिक न्याय का माध्यम बनाया। रूस की बोल्शेविक क्रांति और चीन के माओवादी आंदोलन ने बिहार के भूमि सुधार आंदोलनों को दिशा दी। इन आंदोलनों का उद्देश्य सामाजिक असमानता को समाप्त करना और भूमि के अधिकारों को गरीब किसानों तक पहुंचाना था। बिहार के कई आंदोलनकारियों ने इन विदेशी विचारधाराओं से प्रेरणा लेकर सामाजिक सुधारों के लिए संघर्ष किया।[12]

निष्कर्ष

बिहार के आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का गहरा और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। चाहे वह औपनिवेशिक काल के दौरान भारत की स्वतंत्रता के लिए चलाए गए संघर्ष हों या स्वतंत्रता के बाद सामाजिक और आर्थिक सुधारों के लिए उठाई गई आवाजें, अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने बिहार के आंदोलनों को नई दिशा दी है। वैश्विक घटनाओं जैसे प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, रूसी क्रांति, अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियां, शीत युद्ध, और वैश्वीकरण की नीतियों ने बिहार में उभरे आंदोलनों को प्रेरणा दी और उन्हें प्रोत्साहित किया। बिहार के आंदोलनकारी और समाज सुधारक न केवल स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावित हुए, बल्कि अंतरराष्ट्रीय घटनाओं और विचारधाराओं से भी शिक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त किया। बिहार के आंदोलनों में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की अंतिम भूमिका यह रही कि इन घटनाओं ने बिहार के आंदोलनों को व्यापक दृष्टिकोण और सोचने का एक नया आयाम दिया। चाहे वह चंपारण सत्याग्रह हो, जो महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह से प्रेरित था, या जेपी आंदोलन, जो वैश्विक लोकतांत्रिक विचारों से प्रभावित था, अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने बिहार के आंदोलनों को वैश्विक स्तर पर जोड़ने में मदद की।

प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध ने बिहार के आंदोलनों को तेज किया, क्योंकि इन घटनाओं के दौरान ब्रिटिश

शासन की नीतियों के खिलाफ असंतोष बढ़ा। इसी प्रकार, शीत युद्ध के समय उभरी साम्यवादी विचारधारा ने बिहार में नक्सलवादी आंदोलनों को प्रेरित किया। वैश्वीकरण की नीतियों के तहत 1990 के बाद बिहार में कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों में हुए बदलाव भी अंतरराष्ट्रीय आर्थिक घटनाओं से जुड़े रहे। इन सभी घटनाओं ने बिहार के आंदोलनों को न केवल स्थानीय मुद्दों तक सीमित रखा, बल्कि उन्हें वैश्विक संदर्भों में भी जोड़कर देखा गया। बिहार में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव आगे भी जारी रहेगा, और यह देखने की आवश्यकता है कि ये घटनाएँ आने वाले समय में कैसे नई चुनौतियों और संभावनाओं को जन्म देंगी। वैश्वीकरण और नवउदारवाद की नीतियों ने जहां एक ओर बिहार को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ दिया है, वहीं दूसरी ओर असमानता और सामाजिक संघर्षों की नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। बिहार में हुए आंदोलनों में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। इन घटनाओं ने आंदोलनों को नया दृष्टिकोण, ऊर्जा और प्रेरणा दी। भविष्य में भी, बिहार के आंदोलनों को वैश्विक संदर्भ में समझना और उनसे प्रेरणा लेना आवश्यक होगा, ताकि राज्य में सामाजिक और आर्थिक सुधारों की दिशा में सार्थक बदलाव किए जा सकें।

संदर्भ

1. मिश्रा, डॉ. जे. पी. (2003). आधुनिक भारत का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, पृष्ठ 531.
2. राय, कालेश्वर (2008). बिहार का इतिहास, किताब महल, इलाहाबाद, पृष्ठ 470.
3. वही, पृष्ठ 539.
4. यादव, जी. (2019). नक्सलवादः एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. सारस्वत प्रकाशन, पटना, पृष्ठ 150.
5. राय, कालेश्वर (2008). बिहार का इतिहास, किताब महल, इलाहाबाद, पृष्ठ 506.
6. शर्मा, ए. (2010). रूसी क्रांति का भारतीय आंदोलनों पर प्रभाव. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 112.
7. शर्मा, ए. (2012). नक्सलवाद और बिहार का समाज. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 85.
8. कुमार, जी. (2016). बिहार में सामाजिक आंदोलनों में अंतरराष्ट्रीय प्रेरणाएँ. भारतीय समाजशास्त्र शोध पत्रिका, 8(1), 90–91.
9. शर्मा, आर. (2015). बिहार के श्रमिक आंदोलन और वैश्विक आर्थिक घटनाएं. वाणी प्रकाशन, पटना, पृष्ठ 67.
10. सिंह, आर. (2014). बिहार में श्रमिक आंदोलन और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन. प्रकाशन संस्थान, पटना, पृष्ठ 125.
11. वर्मा, एस. (2014). लोहिया और समाजवाद एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. प्रभात प्रकाशन, पटना, पृष्ठ 85–86.
12. सिंह, एम. (2015). भारतीय भूमि सुधार और नक्सलवादरू वैश्विक प्रभावों का विश्लेषण. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृष्ठ 110.

Cite this Article-

डॉ० अमरधर लाल, "बिहार में हुए आंदोलनों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:10, October 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i3003

Published Date- 04 October 2024